पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

क्या करूँ हवा पानी ऐसा है, उसे सम्भालना पड़ता है। हर किसी का मैं अपने ऊपर दबाव फील करता हूँ। इसका मतलब तो यही हो गया ना कि जिसके साथ मैं आज तक रहा हूँ, यदि उनके साथ ठीक से नहीं रहा तो मुश्किल होती है, जीना दूभर हो जाता है, यही सबका रोना है।

✶✶✶

आपको पता है, यह बातें हमसे या आपसे कौन कर रहा है? गुलाम बात कर रहा है। सभी आज प्रकृति के दास हैं। अर्थात् अपनी पुरानी नेचर के दास हैं, तथा बाहरी प्रकृति भी उसमें पूरी तरह से सहयोगी है। आज हम अपने परमात्मा से अलग हुए तो किसी के सम्पर्क में तो आयेंगे ना! किसके सम्पर्क में आये हम, प्रकृति के ना! अर्थात् हमारा स्वभाव संस्कार जो इस शरीर द्वारा हमने अंदर जोड़ा। आज इतनी गहराई से जुड़ गए कि निकलना मुश्किल होगा ही। क्योंकि आज सबकुछ कर्मेन्द्रियों के अधीन है। कुछ भी हम अपने हिसाब से नहीं कर सकते। इन्हीं कर्मेन्द्रियों से आप अच्छा कर्म कराना चाहो तो भी साधारण कर्म हो जाता है। और साधारण कर्म तो हम खुशी से कर लेते हैं, और श्रेष्ठ कर्म को हम दरकिनार कर देते हैं। चाहे कारण नेचर का हो या प्रकृति के आधार का हो या दुनिया के रस्म-रिवाज का हो, उसके आधार से ही कर्म हो रहा है। अर्थात् मैं इनके इतना अधीन हूँ कि ना चाहते हुए भी मुझे कर्म करना पड़ता है। अगर हम भगवान की संतान हैं तो आज भगवान हमें मास्टर का टाइटल देते हैं, कहते हैं कि तुम प्रकृति के अधीन कैसे हो

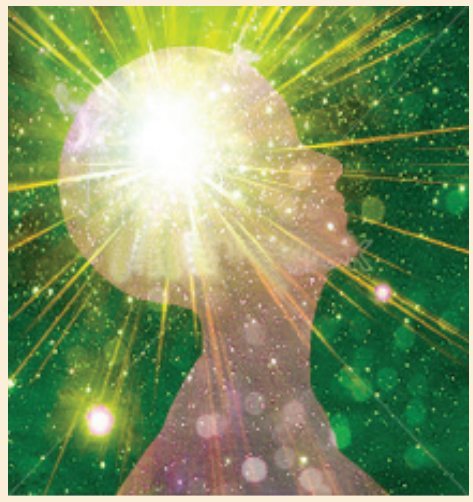

सकते हो! अगर किसी का मेरे ऊपर दबाव या प्रभाव है, माना मैं गुलाम हो गया। अगर मैंने आपस में मोह वश, लोभ वश कर्म किया तो फिर उस कर्म से खुशी नहीं होगी। आज इसीलिए मन खुशी अनुभव करना तो चाहता है, लेकिन कर नहीं पाता। हमको मन और बुद्धि से ऊपर उठना है, अर्थात् मन बुद्धि में प्रकृति से सम्बंधित ही बातें हैं, जो शरीर में दर्द है, शरीर के सम्बंधियों से तकलीफ है, शरीर से जुड़ी हुई वस्तुओं से तकलीफ है जो मन को कमज़ोर बनाये हुए हैं। अगर आज हम अच्छा संकल्प भी करते हैं तो इन्हीं सारी चीज़ों के लिए करते हैं। कभी हम ये नहीं सोचते कि हम ही इनको चलाने वाले हैं, ना कि चलने वाले हैं। मन बुद्धि को हमको ही तो जीतना पड़ेगा ना! इन बातों को बार बार याद दिलाकर गुलामी से छूटना पड़ेगा। अगर आप सबका अनुभव जाकर पूछो तो सभी के अनुभवों में जिन संकल्पों से दु:ख है वो सारी प्रकृति से सम्बंधित ही है, जो हमारी नेचर बिल्कुल भी नहीं है। क्योंकि हमारी नेचर में नाम, मान शान सम्मान जुड़ गया है, ना कि ये पहले से था। जिसको अपनी कदर होगी, आत्मा को शक्तिशाली बनाने का मन होगा, शक्तिशाली संकल्प सिर्फ और सिर्फ आत्मा की उन्नति के लिए होंगे, ऐसी आत्मायें या ऐसे लोग एक नया कदम उठा सकते हैं। हमें ये बातें समझ में इसलिए नहीं आ रही हैं आजकल, क्योंकि आजकल इतना ज़्यादा डिस्ट्रैक्शन है कि ना चाहते हुए भी हमें ये सारी चीज़ें करनी पड़ जाती हैं। तो समझो इन बातों को और गुलामी से निकलो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-2 (2017-2018)

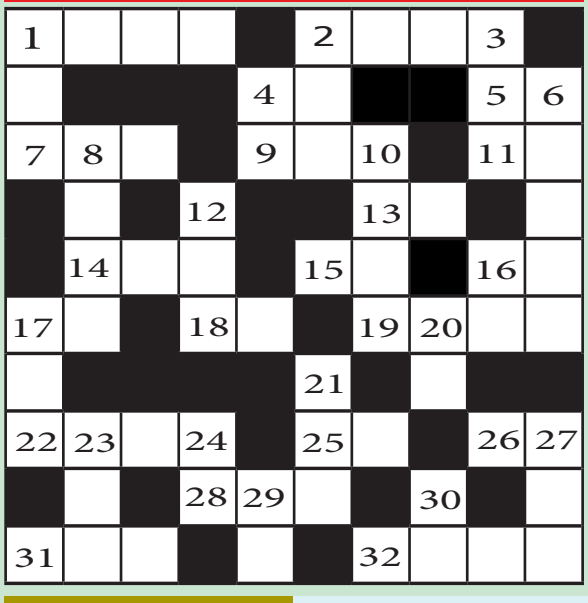

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. दैवी गुणों वाला, देव (3)
2. वरदाता....एक बाप ही है (3)
3. शिक्षा, सावधानी (3)
4. बदबू, दुर्गन्ध (2)
6. विनीत होने वाला, सम्मान में झुकना (5)
8. अवगुण, दुर्बलता (4)
10. प्रसिद्ध, नामचीन (4)
12. ओर, माया चमाट मार कर बच्चों का मुँह अपनी....मोड़ लेती है (3)
16. बहुमूल्य रत्न, जवाहर, नाग के मस्तक में रहने वाली (2)
17. कोमल, सुकुमार (3)
20. आत्मा की एक इन्द्रिय (2)
21. असन्तुष्ट, प्यासा (3)
23. केवल, सिर्फ (3)
24. बाप से सर्व सम्बन्धों का.... लेना है (2)
27. अवास्तविक बात, प्रवाहित करना (3)
29. जन्म और पालना देने वाली (2)
30. पानी, नीर (2)

बायें से दायें

1. शरीरधारी, जीवात्मा (4)
2. योग्यता, विशेष कला (4)
4. रुकावट, विघ्न (2)
5. समाना, खो जाना (2)
7. बल, योग से ही...आयेगी (3)
9. परेशान करना, तंग करना (3)
11. राय, विचार, श्रीमत में मन... मिक्स नहीं करना (2)
13. छिपा हुआ, लुप्त (2)
14. मज़ाकिया, हँसाने वाला (3)
15. मुर्दा, लाश (2)
16. मगन, खोये रहना (2)
17....तू कल्याणी बन, स्त्री (2)
18. परिणाम, किये हुए कर्म का.....अवश्य मिलता है (2)
19. मनोहर, मन को मोहने वाला सुन्दर स्थान (4)
22. ताकतहीन, लाचार (4)
25. इच्छा, कामना, प्यास (2)
26. किस समय (2)
28. खत्म, पूरा होना (3)
31. चाँदी, धवल (3)
32. फँसना, मूँझना (4)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

भुवनेश्वर-ओडिशा। सेल्फ गवर्नमेंट डे के अवसर पर समाज की आध्यात्मिक एवं नैतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक से 'नगरबंधु अवॉर्ड' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

राँची-चौधरी बगान। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मेयर आशा लकड़ा, एम.टी.आई. कार्यकारी निदेशक कामाक्षी रामन, आर.डी. सिंह,रा.अ.,अ.पे.डी. एसोसिएशन, ब्र.कु.निर्मला तथा अन्य।

रूरा-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.बी. आइ. बैंक मैनेजर रंजिता सिंह, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. प्रियंका, सी.डी. कॉलेज की पूर्व प्रिन्सीपल श्रीमति शकुन्तला तथा अन्य।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। 'सेल्फ गवर्नेन्स फॉर गुड गवर्नेन्स कैम्पेन' के कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. प्रो. स्वामीनाथन, न्यायाधीश पी.एस. नारायण, सदस्य,महादायी जल विवाद सभा तथा ब्र.कु. सतबीर।

दिगावा मंडी-हरि.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर प्रतिभावान छात्राओं के सम्मान समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए सिवनी के डी.एस.पी. विजय पाल, ब्लॉक समिति के चेयरमैन नंदलाल मतानी, खंड शिक्षा अधिकारी शक्ति पाल आर्य, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. शकुन्तला तथा ब्र.कु. रानी।

दिल्ली-पालम। स्वर्णिम सांस्कृतिक जागृति अभियान के अंतर्गत कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या में मंचासीन हैं ब्र.कु. सतीश, ब्र.कु. दयाल, ब्र.कु. युगरत्न, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।